# वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग–भेद तथा विद्यालय के स्वरुप के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

**डॉ0 भूपेन्द्र सिंह* और बबिता शर्मा****

## सारांश

प्रत्येक व्यक्ति कुछ विशिश्ठ शक्तियों को लेकर जन्म लेता है और इन्हीं अन्तर्निहित शक्तियों में सर्जनात्मकता भी एक शक्ति है, यह एक विशेश ढ़ंग से चिन्तन करने का तरीका होता है जिसे सर्जनात्मक चिन्तन कहा जाता है। यह शक्ति व्यक्ति की चिन्तन शैली में, अध्ययन में, खेलकूद मे, घटनाओं को स्मरण करने में, किसी समस्या के समाधान में, सामाजिक अन्तक्रियाओं में तथा अन्य किसी भी कार्य में देखी जा सकती है। सर्जनशीलता को यदि स्वस्थ वातावरण मिलता है तो यह पनप जाती है अन्यथा समाप्त हो जाती है। फलस्वरुप सर्जनात्मकता पर वातावरण, परिवार, समाज, लिंग, विद्यालय, शिक्षक, मित्रमण्डली आदि सभी का प्रभाव देखने को मिलता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन एवं प्रयास है यह जानने का, कि क्या विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता पर उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति, लिंग एवं विद्यालय के स्वरुप का कोई प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं।

## प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का साधन है यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने का एक औपचारिक साधन है किन्तु शिक्षा कहीं से और कभी भी प्राप्त की जा सकती है। शिक्षा प्राप्त करना हमारा मौलिक अधिकार है। व्यक्तिगत विकास और आधुनिक लोकतान्त्रिक समाज के लिए यह अति आवश्यक है। भारत एक लोकतान्त्रिक देश है और किसी देश में जनतन्त्र तभी सफल हो सकता है जब वहॉ की जनता शिक्षित हो। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में चिन्तन, विभिन्न कौशलों में दक्षता एवं उतदायित्व जैसे मूलभूत गुणों का विकास होता है। फलतः व्यक्तिगत उत्कृश्टता बढ़ती है, सामूहिक और व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता को प्रश्रय मिलता है और इससे अधिक राश्ट्रीय प्रतिबद्धता को बल मिलता है।

शिक्षा वह माध्यम है, जिस पर किसी देश की प्रगति निर्भर करती है। अपने देश ने वैज्ञानिक तथा तकनीकी क्षेत्र में प्रगति की है, इसके बावजूद भी विकसित देशों की तुलना में आर्थिक विकास में पिछड़ा हुआ है। इस समस्या का एक कारण यह है कि व्यक्ति के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान न देना। प्रत्येक व्यक्ति कुछ विशिश्ट शक्तियों को लेकर जन्म लेता है, जब तक इन शक्तियों का विकास नहीं होगा, तब तक व्यक्ति का विकास असंभव है। अतः सबसे आवश्यक है इन शक्तियों को पहचानने की। इन्हीं अन्तर्निहित शक्तियों में सर्जनात्मकता भी एक शक्ति है। सर्जनात्मकता एक विशेश ढ़ंग से चिन्तन करने का तरीका होता है जिसे सर्जनात्मक चिन्तन कहा जाता है। ड्रेवर के अनुसार 'अनिवार्य रुप से किसी नूतन वस्तु का सर्जन करना, रचना करना जिसमें नवीन विचार संग्रहीत हो जिसमें विचारों का संश्लेशण हो और जहॉ मानसिक उत्पाद केवल विचारों का योग मात्र न हो।'

सर्जनात्मकता विभिन्न स्थितियों के साथ नवीन सम्बन्ध स्थापित करना अथवा स्थिति विशेश के प्रति नवीन दृश्टिकोणों की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार सर्जनात्मकता चिन्तन शैली में, अध्ययन में, किसी कार्य में, खेलकूद में और सामाजिक अन्तक्रियाओं में सम्भव है। लगभग सभी कार्य जो हम करते है, उनसे स्थिति विशेश में पुराने सम्बन्धों को नवीन व्यवस्था और रुप प्रदान कर सकते है। हमारे घटनाओं के स्मरण करने में सर्जनात्मकता निहित है। जब हम किसी समस्या का समाधान ढूंढते है, तब हम सृजनशील रहते है। वास्तव में बिना सर्जनात्मक दृश्टिकोण रखे समस्या का समाधान नहीं हो सकता । थर्स्टन के अनुसार, 'वह क्रिया सर्जनात्मक है, जिसका हल यकायक प्राप्त हो जाए, क्योंकि इस प्रकार का हल विचारक के लिए सदैव नवीनता लिए हुए होता है।'

सर्जनात्मकता मानव के क्रियाकलापों एवं निश्पति के लिए आवश्यक है। सर्जनात्मकता का अर्थ

*सहायक प्रोफेसर, जी0एस0 शिक्षा महाविद्यालय लुहारी, झज्जर, (हरियाणा)
**सहायक प्रोफेसर, जी0एस0 शिक्षा महाविद्यालय लुहारी, झज्जर, (हरियाणा)

वैज्ञानिक या कलात्मक सर्जन से ही नहीं है अपितु सर्जनात्मकता किसी भी व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति के कार्य या व्यवसाय में सर्जनात्मकता के दर्शन होते हैं। बढ़ई लकडी से मनचाही कलात्मक मेज बना सकता है।, चित्रकार मन चाहे रंगों से नवीन कलाकृति की रचना करता है। कवि, कविता रचता है और गीतकार गीत रच सकता है अतः प्रत्येक व्यक्ति में सर्जन की संभावनायें होती हैं।

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में सर्जनात्मकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। आजादी से पूर्व देश में चित्रकला, स्थापत्य कला, संगीत, साहित्य इत्यादि के क्षेत्र में अद्वितीय सर्जन हुआ है। ब्रिटिश काल एवं स्वाधीनता के पश्चात् गठित विभिन्न शिक्षा विशयक आयोंगों एवं समितियों नं छात्रों के सर्जनात्मकता के विकास को महत्व प्रदान करते हुए अपने प्रतिवेदनों में इनके विकास हेतु सझाव दिए हैं।

वर्तमान शिक्षा, वैज्ञानिक और मनावैज्ञानिक आधार पर आधारित है। इसके परिणामस्वरुप ही प्राचीन काल से चली आ रही अध्यापक केन्द्रित शिक्षा के स्थान पर बालकेन्द्रित शिक्षा का जन्म हुआ। जिसके कारण शिक्षा की प्रक्रिया में बाल सुलभ आवश्यकताओं और मनोभावों को महत्व मिलने लगा है। प्रारम्भ से आज तक, शिक्षा शास्त्रियों की यह कौशिश रही है कि शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की जाये, जिससे विद्यार्थियों का सर्वागींण विकास श्रेश्ठ रुप में हो। वरिश्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आयु किशोरावस्था की चरम सीमा पर होती है। मानव विकास की अवस्था में किशोरावस्था एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है। अतः यह जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि वर्तमान में वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता पर उनकी सामार्जिक आर्थिक स्थिति, लिंग एवं विद्यालय के स्वरुप का कोई प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं ? यह जानने हेतु प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है।

### उद्देश्य

1. वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता की जानकारी प्राप्त करना।
2. सामाजिक–अर्थिक स्तर के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का अध्ययन करना।
3. लिंग–भेद के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों के स्वरुप के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का अध्ययन करना।

## परिकल्पना

1. वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर से प्रभावित नहीं है।
2. लिंग–भेद के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता में अन्तर नहीं है।
3. विद्यालयों के स्वरुप के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता में अन्तर नहीं है।

## शोध विधि

अध्ययन की प्रकृति को दृश्टिगत रखते हुए, इस अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रुप में रेवाड़ी जिले के 4 सरकारी तथा 4 निजी विद्यालयों का यादृच्छिकी न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। इन विद्यालयों में अध्ययनरत ग्यारवीं तथा बाहरवीं कक्षा में अध्ययनरत 315 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में स्वीकार किया गया।

## उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया :

1. अपसारी उत्पादन योग्यतायें परीक्षण (के0एन0शर्मा)
2. सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी(आर0एल0भारद्वाज)

## प्रयुक्त सांख्यिकी

परीक्षण से प्राप्त प्रदतों से निश्कर्श निकालने के लिए मध्मान मानक विचलन व टी–मान का प्रयोग किया गया।

## विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका –1

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का विवरण :

| क्रम संख्या | सर्जनात्मकता के आयाम | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन |
|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रवाहता | 315 | 2.50 | 1.76 |
| 2 | नम्यता | 315 | 2.53 | 1.84 |
| 3 | मौलिकता | 315 | 5.66 | 3.01 |
| 4 | विस्तारण | 315 | 3.93 | 3.12 |
| | कुल सर्जनात्मकता | 315 | 25.95 | 6.40 |

तालिका –1 में प्रदर्शित सर्जनात्मकता के विवरण को देखने से पता चलता है कि वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सम्पूर्ण सर्जनात्मकता का मध्यमान 25.95 तथा मानक विचलन 6.65 पाया गया। इन मध्यमानों पर दृश्टिपात करने से स्पश्ट होता है कि वरिश्ठ माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में प्रवाहता सबसे कम जबकि मौलिकता सर्वाधिक पायी गयी। विस्तारण मौलिकता से कम तथा नम्यता से अधिक पाया गया।

## तालिका – 2

| क्रम संख्या | सर्जनात्मकता के आयाम | उच्च-निम्न समाजिक-आर्थिक स्तर | | | निम्न समाजिक-आर्थिक स्तर | | | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | |
| 1 | प्रवाहता | 127 | 2.95 | 2.00 | 188 | 1.74 | 1.11 | 12.10** |
| 2 | नम्यता | 127 | 3.37 | 1.54 | 188 | 2.09 | 1.66 | 7.11** |
| 3 | मौलिकता | 127 | 5.94 | 2.68 | 188 | 4.85 | 3.34 | 3.11** |
| 4 | विस्तारण | 127 | 4.33 | 2.88 | 188 | 3.37 | 2.00 | 3.55** |
| | कुल सर्जनात्मकता | 127 | 28.47 | 6.78 | 188 | 22.89 | 6.42 | 7.54** |

### सामजिक–आर्थिक स्तर के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का विवरण :

**0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका–2 को देखने से पता चलता है कि उच्च –निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर और निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रवाहता के मध्य टी–मान 12.10, नम्यता के मध्य टी–मान 7.11, मौलिकता के मध्य टी–मान 3.11, विस्तारण के मध्य टी–मान 3.55 पाया गया। तथा कुल सर्जनात्मकता के मध्य टी–मान 7.54 पाया गया। ये सभी टी–मान 0.01 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गयी। इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता प्रभावित पायी गयी।

## तालिका – 3
## लिंग–भेद के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का विवरण

| क्रम संख्या | सर्जनात्मकता के आयाम | महिला विद्यार्थी | | | पुरुष विद्यार्थी | | | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | |
| 1 | प्रवाहता | 111 | 2.44 | 1.78 | 204 | 1.98 | 1.41 | 3.72** |
| 2 | नम्यता | 111 | 3.03 | 1.74 | 204 | 2.39 | 0.82 | 4.92** |
| 3 | मौलिकता | 111 | 6.09 | 1.34 | 204 | 5.07 | 1.67 | 6.00** |
| 4 | विस्तारण | 111 | 4.20 | 1.54 | 204 | 3.29 | 1.77 | 4.78** |
| | कुल सर्जनात्मकता | 111 | 27.41 | 5.63 | 204 | 25.69 | 8.45 | 1.97* |

** 0.01 स्तर पर सार्थक *0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका 3 पर दृश्टिपात करने से ज्ञात होता है कि वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत महिला और पुरुश विद्यार्थियों की प्रवाहता, नम्यता, मौलिकता और विस्तारण के टी–मान 0.01 स्तर पर सार्थक तथा कुल सर्जनात्मकता का टी–मान 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गई। इसका तात्पर्य यह है कि लिंग–भेद के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कुल सर्जनात्मकता और सर्जनात्मकता के प्रवाहता, नम्यता, मौलिकता और विस्तारण सम्बन्धी सभी आयामों में सार्थक अन्तर था।

## तालिका – 4
## विद्यालयों के स्वरुप के आधार पर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता का विवरण

| क्रम संख्या | सर्जनात्मकता के आयाम | सरकारी विद्यालय | | | निजी विद्यालय | | | टी–मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | |
| 1 | प्रवाहता | 158 | 1.84 | 1.14 | 157 | 2.56 | 1.57 | 5.14** |
| 2 | नम्यता | 158 | 1.92 | 0.97 | 157 | 3.52 | 1.84 | 11.42** |
| 3 | मौलिकता | 158 | 5.01 | 1.31 | 157 | 5.36 | 1.40 | 4.64** |
| 4 | विस्तारण | 158 | 3.45 | 1.58 | 157 | 4.10 | 1.64 | 20.96** |
| | कुल सर्जनात्मकता | 158 | 22.58 | 5.51 | 157 | 28.15 | 7.46 | 7.72** |

** 0.01 स्तर पर सार्थक

तालिका 4 का अवलोकन करने से ज्ञान होता है कि सरकारी तथा निजी वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रवाहता, नम्यता, मौलिकता, विस्तारण और कुल सर्जनात्मकता सभी के टी–मान 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार की गई। इससे यह पता चलता है कि विद्यालयों के आधार पर वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कुल सर्जनात्मकता और सर्जनात्मकता के सभी आयामों में सार्थक अन्तर था।

## निष्कर्ष

1 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता के विभिन्न आयामों में इन विद्यार्थियों में मौलिकता सबसे अधिक एवं प्रवाहता सबसे कम पायी गयी, जबकि विस्तारण, मौलिकता के पश्चात दूसरे स्थान पर तथा नम्यता तीसरे स्थान पर पायी गयी।

2 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च–निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर के विद्यार्थी निम्न सामाजिक– आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों से अधिक सर्जनशील पाये गये।

3 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत महिला विद्यार्थी पुरुश विद्यार्थियों से सार्थक रुप से अधिक सर्जनशील पाये गये ।

4 निजी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी सरकारी वरिश्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से सार्थक रुप से अधिक सर्जनशील थे।

## सन्दर्भ


अग्रवाल , जे0सी0 (2007), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, दिल्ली : शिप्रा पब्लिकेशन।

अस्थाना एवं अग्रवाल, (1977), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, पृश्ठ 438–439.

Bhardwaj, RL. (2001), Manual Socio-Economic Status Scale, Agra : National Psychological Corporation.

जौहरी, बी0पी0 एवं पाठक, पी0डी0 (1997) भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

पांडेय, आर0एस0 (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, पृश्ठ 277.

Sharma, K.N. (1987), Manual Divergent Production Abilities, Luknow : Ankur Psychological Agency.

सिंह, के0 (2006), भारतीय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास, आगरा : एच0पी0 भार्गव बुक हाउस।

श्री वास्तव, जी0पी0 (1996), सामाजिक अनुसन्धान सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी, नई दिल्ली : युनिवर्सिटी पब्लिकेशन।

वालिया, जे0एस0 (2007), माध्यमिक शिक्षा एवं स्कूल प्रबन्ध, जालन्धर : पॉल पब्लिशर्ज

व्यास,एच0 और व्यास , के0 (2004), शैक्षिक प्रबन्ध और शिक्षा की समस्याएं, नई दिल्ली : आर्य बुक डिपो।